नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नमः

On Line – आगममंजूषा

दसासूयक्खंध-निज्जुत्ति

* संकलन एवं प्रस्तुतकर्ता *

मुनि दीपरत्नसागर [M.Com., M.Ed., Ph.D.]

||किंचित् प्रास्ताविकम्||

ये आगम-मंजूषा का संपादन आजसे ७० वर्ष पूर्व अर्थात् वीर संवत २४६८, विक्रम संवत-१९९८, ई.स.1942 के दौरान हुआ था, जिनका संपादन पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरिजी म.सा.ने किया था| आज तक उन्ही के प्रस्थापित-मार्ग की रोशनी में सब अपनी-अपनी दिशाएँ ढूंढते आगे बढ़ रहे हैं|

हम ७० साल के बाद आज ई.स.-2012,विक्रम संवत-२०६८,वीर संवत-२५३८ में वो ही आगम-मंजूषा को कुछ उपयोगी परिवर्तनों के साथ इंटरनेट के माध्यम से सर्वथा सर्वप्रथम “ OnLine-**आगममंजूषा** ” नाम से प्रस्तुत कर रहे हैं|

* मूल आगम-मंजूषा के संपादन की किंचित् भिन्नता का स्वीकार *

[१]आवश्यक सूत्र-(आगम-४०) में केवल मूल सूत्र नहीं है, मूल सूत्रों के साथ निर्युक्ति भी सामिल की गई है|

[२]जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) में भी केवल मूल सूत्र नहीं है, मूलसूत्रों के साथ भाष्य भी सामिल किया है|

[३]जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) का वैकल्पिक सूत्र जो “पंचकल्प” है, उनके भाष्य को यहाँ सामिल किया गया है|

[४] “ओघनिर्युक्ति”-(आगम-४१) के वैकल्पिक आगम “पिंडनिर्युक्ति” को यहाँ समाविष्ट तो किया है, लेकिन उनका मुद्रण-स्थान बदल गया है|

[५] “कल्प(बारसा)सूत्र” को भी मूल आगममंजूषा में सामिल किया गया है| -मुनि दीपरत्नसागर

: Address:-

Mnui Deepratnasagar,
MangalDeep society, Opp.DholeshwarMandir,
POST:- THANGADH Dist.surendranagar.
Mobile:-9825967397 jainmunideepratnasagar@gmail.com

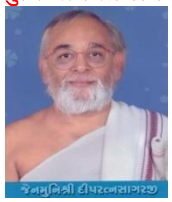

श्रीदशाश्रुतस्कंधनिर्युक्तिः - ओँ नमो वीतरागाय। वंदामि भद्दबाहुं पाइणं चरिमसयलसुयनाणिं। सुत्तस्स कारगमिसिं दसासु कप्पे य ववहारे ॥१॥ आउविवागज्झयणाणि भावओ दव्वओ अवत्थदसा। दस आउविवागदसा वाससयाउं दसह छेत्ता ॥२॥ बाला मंदा किड्डा बला य पण्णा य हायणि पवंचा। पब्भार मुम्मुहि सयणा नामेहि य लक्खणेहिं दसा ॥३॥ दस आ-उविवागदसा नामेहि य लक्खणेहिं एहिंति। दस अज्झयणदसा दस अहक्कमं कित्तइस्सामि ॥४॥ डहरीओ उ इमाओ अज्झयणेसु महई उ अंगेसु। छसु मायाऽऽदीएसुं वत्थविभूसावसाणंमि ॥५॥ डहरीओ उ इमाओ निज्जूढाओ अणुग्गहट्ठाए। थेरेहिं तु दसाओ जो दसाजाणओ जीवो ॥ ६ ॥ असमाहिय१ सबलत्तं२ अणसायण३ गणिगुणा४ मणसमाही५। सावग६ भिक्खूप-डिमा७ कप्पो८ मोहा९ नियाणं१० च ॥७॥ (एवं) दसाण पिंडत्थु एसो भे वण्णिओ समासेणं। एत्तो एक्केक्कंपि य अज्झयणं कित्तइस्सामि ॥८॥ दव्वं जेण व दव्वेण समाही आहियं च जं दव्वं। भावो सुसमाहितया जीवस्स पसत्थजोगेहिं ॥९॥ नामं ठवणा दविए खेत्तद्धा उड्ढ उवरई वसही। संजम पग्गह जोहे अचल गणण संधणा भावे ॥१०॥ वीसंति णवरि णेमं अइरेगाइं तु लेहि सरिसाइं। नायव्वं एएसु य अन्नेसु य एवमाईसु ॥ ११ ॥ असमाहिठाणनिज्जुत्ती समत्ता१। दव्वं चित्तलगोणाइएसु भावसबलो खुतायारो। वतिक्कमअइक्कमेसुं तिपयारे भावसबलो उ ॥ १२ ॥ अवराहम्मि य पयणुए जेण उ मूलं न वच्चए साहू। सबलेइ तं चरित्तं तम्हा सबलत्तणं बिंति ॥१३॥ वाले राई दाली खंडो वोंडि खुते अ भिन्ने य। कम्मग सपट्ट सबले सव्वावि विराहणा भणिआ ॥१४॥ सबलनिज्जुत्ती२ ॥ आसायणा उ दुविहा मिच्छापडिवज्जणा य लाभे अ। लाभे छक्कं तं पुण इट्ठमणिट्ठं दुहेक्केक्कं ॥१५॥ साहू तेणे उग्गह कन्तार विआल विसममुहवाही। जे लट्ठा ते ताणं भणंति आसायणा उ जगे ॥१६॥ दव्वं माणुम्माणं हीणऽहिअं जंमि खेत्ति जं कालं। एमेव छव्विहंमी भावे पगयं तु भावेण ॥१७॥ छट्ठट्ठमपुव्वेसुं आउवसग्गोत्ति सव्वजुत्तिकओ। पयअ-त्थविसोहिकरो दित्ते आसायणा तम्हा ॥१८॥ मिच्छापडिवत्तीए जे भावा जत्थ होंति सब्भूआ। तेसिं तु तहाऽपडिवज्जणाएँ आसायणा तम्हा ॥१९॥ न करेइ दुक्खमोक्खं उज्जममाणोवि

१३४९

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संजमतवेसु । तम्हा अत्तुक्करिसो वज्जेअव्वो पयत्तेणं ॥ २० ॥ जाणि भणिआणि सुत्ते ताणि जो कुणइ अकारणज्जाए। सो खलु भारियकम्मो न गणेइ गुरुं गुरुट्ठाणे ॥ २१ ॥ दंसणनाणचरित्तं तवो य विणओ अ हुंति गुरुमूले। विणओ गुरुमूलेत्ति अ गुरूहिं आसायणा तम्हा ॥२२॥ जाइं भणियाइं सुत्ते ताइं जो कुणइ कारणज्जाए । सो न हु भारियकम्मो तु गणेइ गुरू गुरुट्ठाणे ॥२३॥ सो गुरुमासायंतो दंसणणाणचरणेसु सयमेव। सीयति कत्तो आराहणासु? तो ताणि वज्जेज्जा ॥ २४ ॥आसायणानिज्जुत्ती३ ॥ दव्वं सरीरभविओ भावगणी गुणसमन्निओ दुविहो। गण-संगहुवग्गहकारओ अ धम्मं च जाणंतो ॥२५॥ नायं गणिअं गुणिअं गयं च एगट्ठ एवमाईअं । नाणी गणित्ति तम्हा धम्मस्स विआणओ भणिओ ॥२६॥ आयारम्मि अहीए जं नाओ होइ समणधम्मो उ । तम्हा आयारधरो भण्णइ पढमं गणिट्ठाणं ॥ २७॥ गणसंगहुवग्गहकारओ गणी जो पहू गणधरो उ। तेण णओ छक्कं संपयाए पययं च गुत्तत्थं ॥२८॥ दव्वे भावे य सरीर-संपया छव्विहा य भावंमि । दव्वे खेत्ते काले भावम्मि अ संगहपरिण्णा ॥ २९ ॥ जह गयकुलसंभूओ गिरिकंदरकडगविसमदुग्गेसु । परिवहइ अपरितंतो निअयसरीरुग्गए दंते ॥ ३० ॥ तह पवयणभत्तिगओ साहम्मियवच्छलो असढभावो। परिवहइ असहुवग्गं खेत्तविसमकालदुग्गेसु ॥३१॥ गणिनिज्जुत्ती४ ॥ नामं ठवणा चित्तं दव्वे भावे अ होइ बोद्धव्वं। एमेव समाहीए निक्खेवो चउव्विहो होइ ॥३२॥ जीवो उ दव्वचित्तं जेहिं व दव्वेहिं जंमि वा दव्वे। नाणादिसु सुसमाही धुवजोगी भावओ चित्तं ॥३३॥ दव्वं जेण व दव्वेण समाही आवितं च जं दव्वं। भावे समाहि चउ-विह दंसण नाणे तव चरित्ते ॥३४॥ भावसमाही चित्ते ठिअस्स ठाणा इमे विसिट्ठतरा । होइ जतो पुण चित्ते चित्तसमाहीएँ जइअव्वं ॥३५॥ चित्तसमाहिठाणनिज्जुत्ती५ ॥ दव्व तदट्ठोवासक मोहे भावे उवासका चउरो । दव्वं सरीरभविओ तदट्ठिओ आवणाईसु ॥ ३६ ॥ कुप्पवयणं कुधम्मं हुवासए मोहुवासको सो उ । हंदि तहिं सो सेयंति मण्णति सेयं तु नत्थि तहिं ॥३७॥ भावे उ सम्मदिट्ठी संममणो जं उवासए समणे । तेण सि गोण्णं नामं उवासगो सावगो वेति ॥ ३८ ॥ कामं दुवालसंगं पवयणमणगारऽगारधम्मो अ । ते केवलिहिं पसूआ पउवसग्गो पसूअंति ॥ ॥३९॥ नो ते सावग तम्हा उवासगा तेसु होंति भत्तिगया। अविसेसंमि विसेसो समणेसु पहाणया भणिया ॥४०॥ कामं तु निरवसेसं सव्वं जो कुणइ तेण होइ कयं। तंमि ट्ठिता उ समणा तोवासग सावगा गिहिणो ॥४१॥ दव्वंमि सचित्तादी संजमपडिमा तहेव जिणपडिमा। भावो संताण गुणाण धारणा जा जहिं भणिआ॥४२॥ सा दुविहा छब्बिगुणा भिक्खूण उवासगाण एगूणा। उवरिं भणि-या भिक्खूणुवासगाणं तु वोच्छामि ॥४३॥ तत्थऽहिगारो तु सुहं नातुं आइक्खिउं च गिहिधम्मं। साहूणं चिय तवसंजमंमि संवेगकरणाणि ॥४४॥ जइ ता गिहिणोऽविय उज्जमंति नणु साहुणावि कायव्वं। सव्वत्थामो तवसंजमंमि इअ सुट्ठु नाऊणं ॥४५॥ दंसण१ वय२ सामाइय३ पोसह४ पडिमा५ अबंभ६ सचित्ते७। आरंभ८ पेस९ उद्दिट्ठवज्जए १० समणभूए११ अ ॥४६॥ उवासगप-डिमानिज्जुत्ती६। भिक्खूणं उवहाणे पगयं तत्थ व हवंति निक्खेवो। तिन्नि य पुव्वुद्दिट्ठा पगयं पुण भिक्खुपडिमाए ॥ ४७॥ समाहि उवहाणे या, विवेग पडिमा इय। पडिसंलीणा य तहा, एग-विहारे अ पंचमिआ ॥ ४८ ॥ आयारे बायाला पडिमा सोलस य वन्निआ ठाणे । चत्तारि अ ववहारे मोए दो चंदपडिमाउ ॥ ४९ ॥ एवं तु सुअसमाही पडिमा बावट्ठिया य पंचऽन्ना। सामाइ-अमाईआ चारित्तसमाहिपडिमाउ ॥ ५० ॥ भिक्खूणं उवहाणे उवासगाणं च वन्निया सुत्ते । गणकोवाइविवेगो सब्भिंतरबाहिरो दुविहो ॥५१॥ सोइंदिअमादीआ पडिसंलीणा चउत्थिआ दु-विहा। अट्ठगुणसमग्गस्सा एगविहारिस्स पंचमिआ ॥५२॥ दढसम्मत्तचरित्ते मेधाविबहुस्सुए य अयले य। अरइरइसहे दविए खंता भयभेरवाणं च ॥५३॥ परिजिअकालामंतणखामण तव संजमे अ संघयणे। भत्तोवहिनिक्खेवे आवण्णे लाभ गमणे य ॥५४॥ भिक्खुपडिमानिज्जुत्ती७। पज्जोसवणाए अक्खराइं होंति उ इमाइं गोन्नाइं। परियाय ववत्थवणा पज्जोसवणाइ पागइया ॥५५॥ परिवसणा पज्जुसणा पज्जोसवणा य वासवासो य। पढमसमोसरणंति य ठवणा जेट्ठोग्गहेगट्ठा ॥५६॥ ठवणाए निक्खेवो छक्को दव्वं च दव्वनिक्खेवो। खेत्तं तु जम्मि खेत्ते काले कालो जहिं जो उ ॥ ५७॥ ओदइयाईयाणं भावाणं जा जहिं भवे ठवणा। भावेण जेण य पुणो ठविज्जए भावठवणा उ ॥ ५८ ॥ सामित्ते करणम्मि य अहिगरणे चेव होंति छब्भेयं। एगत्तपुहुत्तेहिं दव्वे खेत्तऽद्धभावे य ॥५९॥ काले समयाई उ पगयं समयंमि तं परूविस्सं। निक्खमणे य पवेसे पाउस सरए य वोच्छामि ॥६०॥ ऊणाइरित्तमासे अट्ठ विहरिऊण गिम्हहेमंते । एगाहं पंचाहं मासं च जहा समाहीए ॥६१॥ काऊण मासकप्पं तत्थेव उवागयाण ऊणाते। चिक्खल्लवासरोहेण वावि तेणऽट्ठिया ऊणा ॥६२॥ वासाखेत्तालंभे अद्धाणाईसु पत्तमहिगा उ। सावगवाघाएण व अपडिक्कमिउं जइ वयंति ॥६३॥ पडिमापडिवन्नाणं एगाहं पंच होंतऽहालंदे। जिणसुद्धाणं मासो निक्कारणओ य थेराणं ॥ ६४ ॥ ऊणाइरित्तमासा एवं थेराण अट्ठ नायव्वा। इयरे अट्ठ विहरिय नियमा चत्तारि अच्छंति ॥ ६५ ॥ आसाढपुन्निमाए वासावासंमि होति ठायव्वं। मग्गसिरबहुलदसमी उ जाव एगंमि खेत्तंमि ॥६६॥ चिक्खल्ल१ पाण२ थंडिल्ल३ वसही४ गोरस५ जणाउले६ विज्जे७। ओसह८ निचया९ हिवई१० पासंडा११ भिक्ख१२ सज्झाए१३ ॥६७॥ बाहि ठिआ वसभेहिं खेत्तं गाहित्तु वासपाउग्गं। कप्पं कहेत्तु ठवणा सावणसुद्धस्स पंचाहे ॥ ६८ ॥ एत्थ य अणभिग्गहिअं वीसइराइं सवीसतीमासं। तेण परमभिग्गहिअं गिहिणातं कत्तिओ जाव ॥ ६९ ॥ असिवाइकारणेहिं अहवा वासं न सुट्ठु आरद्धं। अहिवड्ढिअंमि वीसा इयरेसु सवीसई मासो ॥

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥७०॥ एत्थ तु पणगं पणगं कारणिअं जाव वीसतीमासो। सुद्धदसमीठिआण व आसाढीपुण्णिमोसरणं ॥७१॥ इय सत्तरी जहन्ना असीति नउती दसुत्तरसयं च। जइ वासइ मग्गसिरे दस राया तिन्नि उक्कोसा ॥७२॥ काइअभूमी संथारए य संसत्त दुल्लहे भिक्खे। एएहिं कारणेहिं अप्पत्ते होइ निग्गमणं ॥७३॥ काऊण मासकप्पं तत्थेव ठिआण जाव मग्गसिरो। सालंबणाण छम्मासुग्गह जेट्ठोग्गहो होइ ॥७४॥ उभओ उ अद्धजोअण अद्धं कोसं च तं हवइ खेत्तं। होइ सकोसं जोअण मोत्तूणं कारणज्जाए ॥७५॥ उड्ढमहे तिरियम्मि अ सकोसयं होइ सव्वओ खेत्तं। इंदपयमाइएसुं छद्दिसि सेसेसु चउ पंच ॥७६॥ तिन्नि दुवे एगा वा वाघाएणं दिसा हवइ खेत्तं। उज्जाणाउ परेणं छिन्नमडंबं तु अक्खित्तं ॥७७॥ दगघट्ट तिन्नि सत्त व उडुवासासु न हणंति तं खेत्तं। चउरट्ठाइ हणंती जंघुद्धेक्कोऽवि उ परेणं ॥७८॥ दव्वट्ठवणाऽऽहारे विगई संथार मत्तए लोए। सच्चित्ते अच्चित्ते वोसिरणं गहणधरणादी ॥७९॥ पुव्वाहारोसमणं जोगविवड्ढीए सत्तिओ गहणं। संचतियअसंच-तिए य दव्वविवड्ढी पसत्था उ ॥ ८० ॥ विगतिं विगतिभीओ विगइगयं जो उ गिण्हए भिक्खू। विगई विगइसहावा विगइं विगई बला नेइ ॥८१॥ पसत्थविगईगहणं गरहिय विगतिग्गहो अ कज्जंमि। गरहा लाभ पमाणे पच्चय पावप्पडीघाओ ॥८२॥ कारण उडुगहिए उज्झिऊण गिण्हंति ओअपरिवाडी। दाउं गुरुस्स तिन्नि उ सेसा गिण्हंति एक्केकं ॥८३॥ उच्चार पासवण खेल मत्तए तिन्नि तिण्णि गिण्हंति। संजमआएसाए भुंजेज्ज व सेसमुज्झंति ॥८४॥ धुवलोओ य जिणाणं निच्चं थेराण वासवासासु। असहू गिलाणगस्स व नातिक्कमिज्ज तं रयणिं ॥८५॥ मो तुं पुराणभावियसट्ठे सच्चित्त सेस पडिसेहो। मा निहओ भविस्सइ भोअणमोए अ उड्डाहो ॥८६॥ इरिएसणभासाणं मणवयसा कारिए य दुच्चरिए। अहिगरण कसायाणं संवच्छरिए विओसमणं ॥८७॥ कामं तु सव्वकालं पंचसु समितीसु होइ जइयव्वं। वासासुं अहिगारो बहुपाणा मेइणी जेण ॥८८॥ भासण संपाइवहो दुन्नेओ मोहछेउ ततिआए। इरिअचरिमासु दोसु अ अपेहअपमज्जमाणाणं ॥८९॥ मणवयणकायगुत्तो दुच्चरियाइं व खिप्पमालोए। अहिगरणे अ दुरूवग पज्जोए चेव दमए य ॥९०॥ एगबइल्ला गड्डी पासह तुम्हे विसन्न खलहाणे। हरणे झामण भाणग घोसणया सल्लुद्धेसु ॥९१॥ अप्पिणह तं बइल्लं दुरूवगा तस्स कुंभकारस्स। मा भे दहिही गामं अन्नाणिवि सत्त वासाणि ॥ ९२ ॥ चंपा कुमारनंदी पंचत्थिय थेर णयण दुमवलए। बहि पासणया सावग इंगिणिउववाय णं-दिवरे ॥९३॥ बोहण पडिमादायण पभाव उप्पाय देवया अद्दो। मरणुववाए तावस णयणं तह भेसणं समणा ॥ ९४ ॥ गंधारगिरी देवय पडिमा गुलिया गिलाण पडियरणं। पज्जोअहरण पुक्खरकरणं गहणा ण मे समणा ॥९५॥ दासो दासीवतिओ छत्तट्ठी जो घरे अवत्थव्वो। आणं कोवेमाणो हंतव्वो बंधिअव्वो अ ॥९६॥ खद्धादाणियगेहे पायस दट्ठूण चेडरूवाइं। पियरोभासण खीरे जाइय वद्धेण सेणा उ ॥ ९७ ॥ पायसहरणं छेत्ता पच्चागय दममसिअए सीसं। भाऊपेसण थीखिंसणा य सरणागए जत्थ ॥ ९८ ॥ वाओदएण राई नासइ कालेण सिगयपुढवीणं। नासइ दगस्स राई पव्वयराती उ जा सेलं ॥ ९९ ॥ उदयसरिच्छा पक्खेणऽवेति चउमासिएण सिगयसमा। वरिसेण पुढविराई आमरण गती अ पडिलोमा ॥१००॥ सेलट्ठियंमदारुअ लया य वंसी अ मिंढगोमुत्ता। अवलेहणिआ किमिरागकद्दमकुसुंभयहलिद्दा ॥ १०१ ॥ एमेव थंभकेयणवत्थेसु परूवणा गतीओ अ। मरु अच्चंकारिअ पंडरज्जा मंगू अ आहरणा ॥ १०२ ॥ अवहंतगोण मरुए चउण्ह वप्पाण उक्करो उवरिं। छोढुं मए सुवट्ठा अइकोवण देसु पच्छित्तं ॥ १०३ ॥ वाणिधूअच्चंकारिअ भद्दा अट्ठसुअमग्गओ जाया। वरग पडिसेह सचिवो अणुअंतिहं पयाणं च ॥ १०४ ॥ निवचिंत विआल पडिच्छणा य दाणं न देति निवकहणं। खिंसा निसि निग्गमणं चोरा सेणावई गहणं ॥ १०५ ॥ निव्वत्त जलूग वेज्जग गहणं तंपिअ अणिच्छमाणी उ। गिण्हावेइ जलूगा धणभाउग कहण मोअणया ॥१०६॥ सयगुणसहस्सपायं वणभेसज्जं जइस्स जायणया। तिक्खुत्त दासि भिक्खू न य कोवो सयपयाणं च ॥१०७॥ पासत्थि पंडरज्जा परिन्न गुरुमूल माय अभिओगा। पुच्छइ अपडिक्कमणे पुव्वब्भासा चउत्थम्मि ॥१०८॥ अपडिक्कम सोधम्मे अभिओगा देवि सक्क ओसरणं। हत्थिणि वाउनिसग्गे गोअमपुच्छा य वाकरणं ॥१०९॥ महुरा मंगू आगम बहुसुय वेरग्गि सड्ढ-पूया य। सातादिलोभ नितिए मरणे जीहा य निद्धमणे ॥११०॥ अब्भुवगत गतवइरे णाओ गणिणावि मा हु अहिगरणं। कुज्जा हु विकसाए वा अगट्ठितफलं च सिस्सा उ ॥१११॥ पच्छित्ते बहुपाणा कालो बलिओ चिरं च ठायव्वं। सज्झाय संजमतवे धणिअं अप्पा निउत्तव्वो ॥ ११२ ॥ पुरिमचरिमाण कप्पो उ मंगलं वद्धमाणतित्थंमि। तो परिकहिया जिणपरिकहा य थेरावलिं वोच्छं ॥ ११३ ॥ सुत्ते जहानिबद्धं वग्घारियभत्तपाणअग्गहणं। नाणट्ठितवस्सीअणहिआसि वग्घारिए गहणं ॥ ११४ ॥ संजमखेत्तसुआणं नाणट्ठितवस्सिअणहियासाणं। आसज्ज भिक्खकालं उत्तर-करणेण जइयव्वं ॥११५॥ उन्नियवासाकप्पो लाउयपायं च लब्भए जत्थ। सज्झाएसण सोही वासतिकाले य तं खित्तं ॥११६॥ पुव्वाधीतं नासति नवं च छाओ न पच्चलो घित्तुं। खमगस्स व पारणए वरसति असहू अ बालादी ॥११७॥ बाले सुत्ते सूई कुडसीसग छत्तए य पंचमए। नाणट्ठितवस्सिअणहिआसि अह उत्तरविसेसो ॥११८॥ पज्जोसवणाकप्पस्स निज्जुत्ती८ ॥ नामंठवणामोहो दव्वे भावे य होति बोद्धव्वो। ठाणं पुव्वुद्दिट्ठं पगयं पुण भावठाणेणं ॥११९॥ सव्वं सचित्ताती सयणधणादी दुहा हवइ मोहो। ओघेण गायपडिणी अणेगपगडी भवे मोहो ॥ १२० ॥ अट्ठविहं-पिय कम्मं भणिअं मोहोत्ति जं समासेणं। सो पुव्वगए भणिओ तस्स य एगट्ठिआ इणमो ॥ १२१ ॥ पावे वज्जे वेरे पणगे पंके खुहे असाए य। संगे सल्ले अरए निरए धुत्ते अ एगट्ठा ॥१२२॥

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कम्मे य किलेसे या समुदाणे खलु तहा समाइण्णो। उप्पाए अ दुपक्खे लुक्खे तह संपराए य ॥ १२३॥ अमुते दुह पुण बंधो दुम्मोए खलु चिरट्ठितीए य। घणचिक्कणनिव्वेआ मोहे य तहा महामोहे ॥१२४॥ कहिया जिणेहिं लोगा पगासिआ भारिया इमे बंधा। साहुगुरुमित्तबंधवसेट्ठीसेणावइवधेसु ॥ १२५॥ एत्तो गुरुआसायण जिणवयणविलोवणो सुपडिबद्धं। असुहे दुहाणुबंधीति तेण तो ताइं वज्जेज्जा ॥१२६॥ मोहणिज्जस्स निज्जुत्ती९ ॥ णामंठवणाजाई दव्वे भावे य होइ बोद्धव्वा। ठाणं पुब्बुद्दिट्ठं पगयं पुण भावठाणेणं ॥ १२७॥ दव्वे दव्वसभावो भावे अणुभवण ओहतो दुविहो। अणुभवणा छव्विहा ओहओ उ संसारिओ जीवो ॥१२८॥ जाती आजाती या पच्चाजाती य होइ बोद्धव्वा। जाती संसारत्था आजाती जम्ममन्नयरं ॥१२९॥ इत्तो चुओ भवाओ तत्थेव पुणोवि जह हवति जम्मं। सा पच्चायातित्ति य मणुस्सतेरिच्छिए होइ ॥१३०॥ कामं असंजयस्सा नत्थि हु मोक्खे धुवमेव आयाई। केण विसेसेण पुणो पावइ समणो अणायाइं? ॥१३१॥ मूलगुण उत्तरगुणे अप्पडिसेवी इहं अपडिबद्धो। भत्तोवहिसयणासणविवित्तसेवी सया पयओ ॥ १३२ ॥ तित्थंकरगुरुसाहूसु भत्तिमं हत्थपायसंलीणो। पंचसमिओऽकलहझंझपिसुणओ हारविरओ अ ॥ १३३॥ पाएण एरिसो सिज्झइत्ति कोइ पुणो आगमेसाए। केण हु दोसेण पुणो पावइ समणोऽवि आयाइं? ॥ १३४ ॥ जाणि भणिआणि सुत्ते तहागएसुं तहा निदाणाणि। संदाण निदाणंति य पच्चाति य होंति एगट्ठा ॥१३५॥ दव्वप्पओगवीससप्पओगसं मूलउत्तरे चेव। मूलसरीरसरीरी साती य अणातिए चेव ॥१३६॥ णिगलादि उत्तरो वीससा उ साइअमणादिओ चेव। खित्तंभि जंमि खेत्ते काले कालो जहिं जाओ ॥१३७॥ भावे कसायबंधो अहिगारो बहुविहेसु अत्थेसु। इहलोगपारलोगिअ पगयं परलोगिए बंधे ॥१३८॥ दुविहो अ भावबंधो जीवमजीवे अ होइ बोद्धव्वो। एक्केक्कोऽविय तिविहो विवागअविवागतदुभगगो ॥१३९॥ पावइ धुवमायातिं नियाणदोसेण उज्जमंतोऽवि। विणिवायंपिय पावइ तम्हा अणियाणआ सेआ ॥१४०॥ अप्पासत्थाए अकुसीलयाए अकसाय अप्पमाए अ। अणिदाययाइ साहू संसारमहन्नवं तरइ ॥ १४१ ॥ इति समाप्ता श्रीश्रुतकेवलिभगवद्भद्रबाहुस्वामिविरचिता श्रीदशाश्रुतस्कंधनिर्युक्तिः निर्ग्रन्थगच्छक्रमायातश्रीमत्तपोगच्छीयश्रीमत्सागरानन्दसूरिसंशोधिता, उत्कारिता चेयं श्रीसिद्धक्षेत्रश्रीवर्धमानजैनागममंदिरान्तरशेषागमोत्किरणस्यादौ श्रीवीरनिर्वाणतः २४६७ वर्षे अक्षयतृतीयायां ॥

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org